सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय स्विर-त

लैमेन इवैंजलिकल फैलोशिप, (LEFI,Chennai)

मई-जून, 2009

परमेश्वर के ज़रिए मनुष्यों को प्रेरित करे!

जब हड्सन टेलर एक नव जवान था, उन्होंने अपने आपको समपूर्ण प्रभु को सौंप दिया था। उनको यह दृढ़ विश्वास था कि एक ना एक दिन परमेश्वर उसे चीन देश जरूर भेजेंगे। उन्होंने जॉर्ज मुल्लर के बारे मे भी पढ़ा था। यह भी कि किस प्रकार परमेश्वर ने मुल्लर की प्रार्थना का उत्तर दिया, जब अपने और उन अनाथ बच्चों के लिए उन्होंने प्रार्थना की। उन्हें भी ऐसा विश्वास सिखाने, प्रभु से माँगना शुरू किया। उन्हें ऐसा लगता था कि अगर ऐसे विश्वास के साथ उन्हें चीन जाना हो तो, पहले इंग्लैंड में ही विश्वास के जरिये जीना सीखना पड़ेगा। ऐसा करने के लिए उन्होंने परमेश्वर से सहायता माँगी।

हड्सन टेलर एक वैद्य के पास दवा-वितरक का काम करता था। वह वैद्य एक अच्छे-दिल वाला व्यक्ति था। मगर वेतन समय पर देना भूल जाता था। टेलर ने परमेश्वर से सहायता माँगी कि वह अपने मुँह से वेतन के लिए नहीं पूछे। उन्होंने यह बात परमेश्वर पर छोड़ दी कि वे वैद्य के हृदय पर कार्य करके सही समय पर वेतन दिलवाएं। इससे टेलर को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। उन्हें प्रार्थना में बहुत संघर्ष करना पड़ा। क्योंकि, 'किसी का ऋणी ना हो' इन शब्दों को

पृष्ठ २पर...परमेश्वर के ज़रिए..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ७:०० बजे

प्रार्थना की अन्तर्धारा

'परन्तु तुम हर समय सावधान हो कर प्रार्थना में लगे रहो जिस से कि इन सब बातों से बच निकलने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के लिए तुम में सामर्थ्य हो।' लूका २१:३६

यीशु अपने चेलों को चौकस रहने के लिए, सचेत करते है। कहीं ऐसा ना हो कि भर-पेट भोजन खाने, नशे में धुत और इस जीवन की चिन्ताओं में अधिक निमग्न न हो जायें। परमेश्वर की सेवा करते समय भी संगठन-संबंधी जिम्मेवारियाँ, हमारे प्रार्थना के समय को ले लेता है। और हम अपने आध्यात्मिक जीवन के पैनेपन को खो बैठते है। परमेश्वर के सामने अपने आपको जाँचने के लिए समय अलग निकालना 'अवलोकन' कहलाता है। परमेश्वर की वाणी हम तक पहुँचकर, अपनी अध्यात्मिक स्थिति का हमें अवलोकन कराये, तब तक हमको उनके सामने इन्तजार करना होगा। अगर यह अवलोकन हम से दूर हो जाए तो यह एक बहुत दयनीय स्थिति होगी। कही ऐसा ना हो कि इस संसार का प्रेम, और ऐहिक चिन्ताओं से हम अन्धे हो जाये और इस तरह हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करें, हमें अपनी जाँच करते हुए प्रार्थना में समय बिताना जरूरी है। नियमित रूप से प्रार्थना में अपनी गहराइयों तक जाँचना जरूरी है। जब हमारी आँखों में अन्धापन छा जाये, तो अहंकार हमारे अन्दर प्रवेश करता है। जब हम परमेश्वर में दृढ़े हो रहें होते, तब हम में कुछ हद तक आत्म विश्वास और अहंकार प्रवेश करता है। जब हमारी प्रार्थनाओं के कई जवाब मिलते है तो हम अहंकार से भर जाते है। अगर हम नम्र हों तो परमेश्वर हमें ताड़ना दे कर सही मार्ग में लेकर आते है। हो सकता है कि लोग हमारी गलती को भाँप नहीं पाये, क्योंकि हम एक अच्छा नाम कमा चुकें है। मगर परमेश्वर के वचन की रोशनी में, हमे अपने आप को जाँचना चाहिए।

परमेश्वर तुम्हें एक संवेदनशील और सामर्थी साधन बनाना चाहते है। परमेश्वर तुमको अपने सोच-विचार में भी संवेदनशील बनना चाहते है ताकि तुम सिद्ध बन जाओ। एक नाजुक साधन इस्तेमाल करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। और उसे एक सुरक्षित स्थान पर रखना भी जरूरी है। परमेश्वर जानते है कि तुमको वह कैसे तैयार करे। मगर ऐसा ना हो, शैतान हमेशा कोशिश करता है। कई दफा गलत सहचर और गलत स्थानों पर जाने से हमारी आध्यत्मिकता मंद हो जाती है। परमेश्वर तुम्हारे मन को तेज बनाना चाहते है। और तुम्हारा मन उनके विचारों से भर पूर भरना चाहते है। तब तुमने अपनी प्रार्थना में शायद उतना ही समय लगाया है; मगर तुम अपने हृदय की सारी बातें परमेश्वर को कह चुकें होंगे। इसका कारण यही है कि परमेश्वर का वचन तुम्हारी गहराइयों प र अब पहुँच रहा है। तब परमेश्वर का वचन तुम्हारे पास आयेगा और तुम उसके समतुल रहोगे। जब परमेश्वर ने इब्राहीम से अपने पुत्र को माँगा, वह उस माँग के बराबर ठहरा। जब वह मिश्र में था, परमेश्वर ने उसके पुत्र को नही माँगा।

अपने हृदय से सब मलिनता को दूर कर शुद्ध करने के लिए समय निकालो। तब ऐसा समय आयेगा जब तुम हर समय प्रार्थना ही करते रहोगे। वह एक सहज बात होगी। तुम परमेश्वर के वचन को अधिक और अधिक पढ़ना चाहोगे। वह तुम्हारे मुँह में शहद जैसा होगा। उसको तुम और अधिक समझ पाओगे। प्रार्थना की अन्तर्धारा हर समय बहती रहेगी। तुम काम करते, चलते फिरते, बातें

पृष्ठ २ पर...प्रार्थना की अन्तर्धारा ...

पृष्ठ १ से..परमेश्वर के ज़रिए...

करते भी प्रार्थना करते रहोगे। यीशु भी वैसा ही करते थे। जब चल रहे थे, तब भी वह प्रार्थना कर रहे थे। तब एक स्त्री ने उन्हें छुआ। वह तुरन्त चंगी हो गयी। यीशु बहुत ही संवेदनशील थे और तुरन्त उन्हें आभास हो गया।

हमेशा प्रार्थना में सतर्क रहो। ऐसे जनों की शान्ति महान होगी। अगर तुम सावधान रह कर, प्रार्थना न करो तो तुम नीचे और नीचे गिर जाओगे। अंततः एक अजीब आत्मा तुम पर हावी हो जाएगी। और तुम गलती से उसे परमेश्वर का आत्मा मान बैठोगे। शाऊल के साथ भी ऐसा ही हुआ था। केवल शमूऐल ही उसे समझ पाया। हर एक प्रार्थना करते हुए और हर एक, दूसरे को मदद करते हुए। हमें बहुत सावधान रहना है।

अहंकार बहुत भयानक चीज़ है। हमें अपने आप को नम्र रखना होगा। हमें यह मानना है कि हम कुछ नही जानते। अपने सब कार्य में उन्हीं को स्मरण करना है। यह आसान नहीं है। अपनी ही दृष्टि में हम बुद्धिमान न बने। तुम इस तरह अपने आध्यात्मिक जीवन में धनी होते-होते, तुम लोगों पर अधिक आशिष बनते जाओगे।

जब हम अहंकार से भर कर परमेश्वर के मार्ग से भटक जाते है तो हम पाप में गिरते जायेंगे। हम घमण्डी बन जाते है। मगर जब तुम निरन्तर प्रार्थना में हो, तो तुम यीशु के मन को ही अपनी प्रार्थना बनाकर, करना प्रारंभ करोगे। अपने सपनों में भी तुम परमेश्वर के नजदीक रहोगे। पवित्रात्मा में, तुम अद्भुत शान्ति और आनन्द में मग्न रहोगे। लोग परमेश्वर के बिना जी रहें है क्योंकि उनके सामने, इस तरह जी कर दिखानेवाले कोई नहीं है।

दिखावट रहित, शुद्ध हृदय और साफ हाथों से जब तुम परमेश्वर के राज्य का निर्माण करना आरंभ करते हो, तब परमेश्वर तुम्हारा निर्माण जरूर करेगा।

- एन. दानिय्येल

पृष्ठ १ से..प्रार्थना की अन्तर्धारा...

वह जॉर्ज मुल्लर की तरह अक्षरशः मानते थे। और किसी से ऋण नहीं लेना चाहते थे।

'परमेश्वर के जरिये लोगों को प्रेरित करें', इस महान सीख को उन्होंने इसी तरह सीखा था - यह एक गहरे अर्थ वाला विचार है जो आगे चलकर, उनके चीन में काम के दौरान एक अवर्णनीय अशिष बना। चीनियों के मन फिराने में, अर्पण देने मसीहियों को प्रेरित करने ताकि उस काम में सहायता मिले, - इन सब में उसी बात पर निर्भर था। हम अपनी इच्छाओं को प्रार्थना में परमेश्वर के सामने रखें; तब परमेश्वर का सहारा लें, कि वे लोगों को अपने इच्छा अनुसार प्रेरित करें - विश्वासी जीवन का यह नियम बने। और इस नियम को मानने के लिए तैयार योग्य मिशनरियों को जुटाने में भी टेलर उसी सीख का सहारा लेता था।

चीन में कुछ साल रहने के बाद, उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर, बाईस मिशनरियों को जुटाने में सहायता करे। मंगोलिया सहित, चीन के ग्यारह क्षेत्रों के लिए दो-दो मिशनरी चाहते थे। वहाँ लाखों आत्माएँ तो है मगर कोई मिशनरी नहीं है। परमेश्वर ने ऐसा किया! मगर उनको संगठित करते बाहर भेजने वाली कोई संस्था नहीं थी। परमेश्वर पर, अपने लिए भरोसा रखना तो उन्होंने सीखा जरूर था। मगर बाईस लोगों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेने का साहस उन में ना था, संभवतः उन २२ लोगों में पर्याप्त विश्वास न हो, तो क्या होगा। इस विषय को ले कर उनके मन में बहुत उलझन थी। और इस कारण वह बहुत बीमार भी हुए। अंततः उन्होंने यह देखा कि परमेश्वर, एक हो या बाईस, उन सब को सँभालने में सरल सामर्थ हैं। खुशी और विश्वास के साथ उन्होंने यह जिम्मेवारी उठायी। इस तरह परमेश्वर ने विश्वास के कई कठिन संकटों में उनकी अगुवाई की कि वे उन पर पूरा विश्वास करें। अब यह बाईस, समय के साथ आगे बढ़कर हजार मिशनरी बन गये जो जीवन की सब ज़रूरतों के लिए परमेश्वर पर निर्भर थे। हड्सन टेलर-जो यह नियम बनाने और पालन करने वाले थे, कई दूसरी मिशनरी संस्थायें इस बात से सहमत थीं कि उन्होंने हड्सन टेलर से बहुत कुछ सीखा है; प्रार्थना में जो उनके बच्चे माँगते है उसे पूरा करने परमेश्वर मनुष्यों को प्रेरित करें, यह विश्वास - परमेश्वर पर भरोसा कर सकते है।

उनकी जीवनी पढ़ो। अपनी व्यक्तिगत कक्षा में हो या मिशन के कार्यो में, वह परमेश्वर के बहुत समीप रह कैसे चले; इन सब के बारे में आध्यात्मिक विचार और अनुभव का खज़ाना तुम उसमें पाओगे।

- संकलित

'यीशु ने फिर लोगों से कहा, - जगत की ज्योति मैं हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, वरन् जीवन की ज्योति पाएगा।...इसलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि जब तक तुम विशवास न करो कि मैं वही हूँ, तुम अपने पापों में मरोगे।यूहन्ना (७:१२,२४)'

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-66334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

आत्मिक अभिषेक पाया मोची

विल्यम केरी एक मोची था। इस बात से उन्हें हमेशा गर्व था। उनकी छोटी सी दुकान के बाहर यह सूची रहती थी: 'पुराने जूतों का क्रय-विक्रय - विल्यम केरी।'

सब उनके दुकान को 'श्रीमान केरी विद्यालय' कह कर बुलाते थे। संसार का एक मानचित्र दिवार पर रहता था। वह उसका अध्ययन करते थे। उसके बारे में बातें करते थे। और पूरे संसार के लिए प्रार्थना करते थे। उनके दोस्त उनको पागल समझते थे।

वे एक अध्यापक बन गये और बाद में एक देहाती प्रचारक। अध्यापक और प्रचारक दोनों काम करने का सालाना उनको अस्सी डॉलर मिलते थे। एक दिन जब बॉप्टिस्ट मिशन के पादरी लोग एक सभा में एकत्रित हुए तो उन्होंने संदेश दिया। उनके संदेश का विषय यशायाह ५४:२,३ था। और सारांश में दो महान विचार थे:

पहला : परमेश्वर की ओर से महान कार्य की अपेक्षा करें।

दूसरा : परमेश्वर के लिए महान कार्य करने प्रयत्न करें।

उसी समय 'बॉप्टिस्ट मिशनरी सोसाइटी' बनी। केरी उस संस्था के पहले मिशनरी बने।

बुजुर्ग अन्ड्रू फुल्लर ने कहा: 'भारत में सोने की खान है, मगर लगता है वह भूमि के क्रोड़ केन्द्र, जितनी गहरायी में है। उसे खोज निकालने का साहस कौन करेगा?' और विल्यम केरी ने तुरंत जवाब दिया, 'मैं नीचे जाता हूँ, मगर आप लोग रस्सी जरूर पकड़े रहना!'

इस तरह मोची विल्यम केरी भारत जाने वाला पहला और महान मिशनरी बना। और उनके दोस्त रस्सी जरूर पकड़े रहें।

सालों बीत गये। दुबारा अॅन्ड्रू फुल्लर मिशनरी सोसाइटी के सामने संदेश दे रहे थे। केरी के पिछले संदेश से क्या उत्पन्न हुआ था, यह इस संदेश का विषय था। भारत से आया वह सुखद सामाचार और उस 'अभिषिक्त मोची' द्वारा हासिल सुसमाचार की जीत को ले कर वे सब आनंदित हो रहे थे। केवल केरी ही नहीं, उनके दो बेटे फिलिक्स और विल्यम भी मिशन में मसीही कार्यकर्ता थे।

उनमें से एक पादरी इन दो लड़कों के बारे में कह रहे थे। तब उन्होंने कहा, 'मगर एक तीसरा भी है जो उनको दुख देता है; वह प्रभु की ओर अभी तक नही फिरा है।' अपने आँखों से आँसू बहते उस पादरी ने कहा 'सारे भाई लोग, आइये हम सब, जाबेज़ केरी के मन फिराव के लिए परम पावन मौन में, एकत्र परमेश्वर के समुख अपनी प्रार्थना रखें।' जाबेज एक अजीब नाम है। भारत के दूर दराज मिशन गृह में अपने पिता को दुख पहुँचाने वाले मौजी-पुत्र का वह नाम है। जो भी उपस्थित था सब ने मिलकर प्रार्थना की। तब एक गहरी ख़ामोशी छाई और वे जानते थे कि परमेश्वर उनके निकट है और उनको सुन रहें है। क्या कुछ हुआ था? जब वे सब इग्लैड में प्रार्थना कर रहें थे, क्या भारत में कुछ हुआ था? हाँ, सुनिये:

मिशन से आया अगला पत्र, वह जाबेज पर छायी उस परिवर्तन की कहानी बता रहा है। उसने कहा, जब वे सब मिलकर उस के लिए प्रार्थना में थे। जाबेज केरी ने तुरंत यह निर्णय किया कि वे भी एक मिशनरी बने। एक दिन डॉ. केरी और उनके दोनों मिशनरी पुत्र फीलिक्स और विल्यम, तीनों ने जाबेज के सिर पर हाथ रखकर प्रार्थना में, सुसमाचार प्रचार करने की सेवकाई के लिए जाबेज का अभिषेक किया।

उनका कितना खुशहाल परिवार था। इस में कोई विस्मित बात नही कि डॉ. केरी ने अपने दोस्तों को लिखा: 'मेरे साथ परमेश्वर की स्तुति करो, हम सब मिलकर उनके नाम की महिमा करें। प्रभु मेरी तरफ अत्यंत अनुग्रही रहें है। मुझे विश्वास है कि मेरे सारे बच्चे परमेश्वर से प्रेम करते है; वस्तुतः चारों में से तीन सुसमाचार प्रचार करने का मुख्य काम में व्यस्त है, और उनमें से दो नये देशों में कार्यरत हैं।'

'यीशु ने उनको उत्तर दिया, मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, हर एक जो पाप करता है पाप का दास है। दास सर्वदा घर में नहीं रहता, पुत्र सर्वदा रहता है। इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।
यूहन्ना (७:१२,२४)'

सत्य की परख!

'मूर्ख ने अपने मन में कहा है, 'परमेश्वर है ही नहीं!' वे भ्रष्ट हैं, उन्होंने घृणित कार्य किए हैं, ऐसा कोई नहीं जो भलाई करता हो। भजन संहिता (१४:१)'

जॉर्ज मुल्लर द्वारा प्रार्थना की पाँच शर्तें

परमेश्वर ने जॉर्ज मुल्लर को अपने अन्तिम दिनों में, कलीसिया के लिए एक प्रमाण के तौर पर यह दिया: परमेश्वर अक्षरशः और अद्भुत रीति से, हमेशा अब भी प्रार्थना सुनते है। श्री मुल्लर का कहना है कि उनकी जिन्दगी के दौरान, उनके अनाथालयों को संभालने के लिए दस लाख पौऊड स्टर्लिंग से भी अधिक परमेश्वर ने दिया है। केवल यही नही, प्रभु ने उनको तीस हज़ार से भी अधिक आत्माओं को उनकी प्रार्थना के जवाब में दिया है। उनमें, यतीमों के बीच में से ही नहीं, कई दूसरे भी है जिन केलिए वह हर रोज नियमित रूप से, विश्वास से प्रार्थना किया करते थे। इसी अटल विश्वास के साथ कि वे एक दिन जरूर उद्धार पाएंगे। कुछ लोगों के लिए वह करीब पचास साल तक प्रार्थना करते रहें। 'पाँच ऐसी शर्तें है जो हमेशा पूरा करने की कोशिश करता हूँ।' वे कहते है, 'जिसका पालन करने से मुझे, मेरी प्रार्थनाओं का जवाब मिलने का यकीन है':

१. मुझे जरा भी संकोच नही क्योंकि मुझे यह आश्वासन है कि उन्हें बचाना प्रभु की इच्छा है। 'जो यह चाहता है कि सब लोग उद्धार प्राप्त करें और सत्य जानें। (१ तीमुथियुस २:४) और हमें यह आश्वासन है कि 'यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगे, तो वह हमारी सुनता है।' (१ यूहन्ना ५:१४)

२. उनके उद्धार के लिए मैंने अपने नाम से कभी नही माँगा, बल्कि अपने अनमोल प्रभु यीशु के पावन नाम में और केवल उन्ही के बल पर माँगा। (यूहन्ना १:१४)

३. मुझे दृढ़ विश्वास इस बात से है कि परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुनने के लिए हमेशा इच्छुक है। (मरकुस११:२४)

४. मुझे ध्यान नहीं कि मैंने कभी अपने को किसी पाप के आधीन होने दिया क्योंकि, 'यदि मैं अपने मन में अधर्म को सँजोए रखता, तो प्रभु मेरी न सुनता।' (भजन संहिता ६६:१८)

५. मैं विश्वास सहित प्रार्थना में लगातार लगा रहा। कुछ लोगों के लिए ५२ से भी अधिक सालों से, और ऐसा जवाब आने तक करता रहूँगा: 'क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न करेगा जो रात-दिन उसे पुकारते रहते हैं?' (लुका १८:७)

इन विचारों को अपने हृदय में ले लो। और इन नियमों के अनुसार प्रार्थना का अभ्यास करो। प्रार्थना केवल अपनी इच्छाओं का उच्चारण ना रहे। प्रार्थना परमेश्वर के साथ एक सहभागिता रहे, तब तक, जब तक कि हम विश्वास से यह जाने कि हमारी प्रार्थना सुन ली गयी है।

जॉर्ज मुल्लर जिस पथ पर चले है वह एक नया, जीवित मार्ग है जो हमें अनुग्रह के सिंहासन तक ले चलता है। यह मार्ग हम सब के लिए खुला है।

मृत्युंजय ख्रिस्त

काफ़ी की दुकान में प्रार्थना

चॉर्ल्स कोलसन, राष्ट्रपति रिचार्ड निक्सॅन के एक विशिष्ट भूतपूर्व सहायक रहे थे। वॉटर गेट घौटाले में उनका भी हाथ था और उसी कारण उसे जेल भी जाना पड़ा। मगर सी. एस लेविस द्वारा लिखित 'मियर क्रिस्टियानिटी': नामक पुस्तक पढ़कर, मसीह की ओर उन्होंने मन फिराया।

'बॉर्न अगैन' नामक पुस्तक में उन्होंने अपने इस बदलाव के बारे में लिखा। कॉलिफोर्निया में समाप्त हुई एक अविराम, कमर तोड़ पर्यटन के दौरान उस पुस्तक का प्रकाशन हुआ था। बहुत देर बाद, अपने होटल पहुँचने पर, वह और उनके मित्र फ्रेड डीन ने कुछ खाने के लिए काफ़ी की दुकान में गये थे। स्पेन की जावट से अनुकल्पित उस कमरे में लाल रंग का फर्श और पिटवाँ लोहा की बनी कुर्सी और मेज थे। गुलाबी रंग की वर्दी में एक परिवेषिका उनकी सेवा-टेहल कर रही थी। वह सुंदर युवती थी।

'दो अण्डे का ऑम्लेट, एक दूध और एक ठण्डी चाय' फ्रेड ने कहा। परिवेषिका चेले जाने के बाद दोनों ने कुछ समय अगले दिन के कार्यक्रम के बारे में बातें की। और दोनों ने बाद में आने वाले भोजन का धन्यवाद देने और प्रभु की आशिष मांगने के लिए अपने सिर झुकायें। प्रार्थना काफी लम्बी थी। जब उन्होंने अपने सर उठाये तो, हाथ में आम्लेट लिए वह परिवेषिका खड़ी थी।

'हे!' ऊँची आवाज में बोली, 'क्या तुम प्रार्थना कर रहे थे?' उस छोटे से कमरे में उपस्थित सभी लोग उनकी तरफ देख रहे थे। 'हाँ हम कर रहे थे' कोलसन ने कहा। 'अच्छी बात, यहाँ किसी को प्रार्थना करते मैंने कभी नहीं देखा। क्या तुम प्रचारक हो?'

'नहीं', उन्होंने कहा, मगर वह और प्रश्न पूछती ही रही।

'मैं भी मसीही हूँ। कम से कम मैं कभी मसीही थी' उसने कहा। 'फिर क्या हुआ?' उन दोनों आदमियों ने पूछा। 'जब मैं किशोरी थी, एक रैली में मैंने यीशु मसीह को अपना उद्धरकर्ता माना था। बाद में मैं हवाई राज्य में आकर बस गयी। शायद मेरी उत्सुकता लुप्त हो गयी और उस के बारे में सब कुछ भूल गयी।'

'मुझे नही लगता तुम खो चुकी हो।' कोलसन ने कहाँ 'सिर्फ कुछ समय के लिए तुमने उसे अपने से अलग रखा है।' सोच मे डूबी परिवेषिका ने कहा, 'मजे की बात है। मगर जब मैंने तुम दोनों को प्रार्थना करते देखा, मैं दुबारा उसी उत्साह से भर गयी थी।'

प्रभु के पास फिर वापस लौटने के बारे में, उस खर्चीले पुत्र, और प्रभु का प्रेम और क्षमाशीलता के बारे काफी समय तक उन दोनों ने उस स्त्री से बात की।

उस होटल मे रहते समय फिर उन्होंने उसको देखा। 'हे! तुम दोनों', वह चिल्लायी। उसने कहा कि वह एक मसीही दोस्त के साथ मिलकर बाइबल-अध्ययन के लिए वह अगले दिन जाने वाली है। 'मैं एक कलीसिया को भी ढूँढूँगी। मैं वापस आई हूँ।'

कोलसन ने बाद में लिखा, 'उस रात से पहले मुझे भरे-भोजनालयों में, आहार के लिए प्रभु यीशु का धन्यवाद देते प्रार्थना करने के लिए मैं शर्माता था, मगर उस घटना के बाद में कभी नहीं।'

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।